

20. कर्मणा कर्तव्यम् 25. *machen zu*: मो सुखे प्रतिपद्यस्व *mache mich glücklich* MBh. 4, 703. *Jmd* (loc. gen.) *Etwas thun, gegen Jmd Etwas unternehmen, gegen Jmd verfahren, sich gegen Jmd benehmen*: स कालपवनश्चापि किं कृत्ते प्रत्यपद्यत HARIV. 6425. कुत्राणां पाण्डवानां च प्रतिपत्स्व (!) निरामयम् MBh. 5, 2809 (unter निरामय falsch aufgefasst). यद्विधं प्रतिपेदे हि रामे R. 2, 87, 14. यथाधु प्रतिपद्येत सपत्नीनामचेतना R. GORR. 2, 31, 12. स भवान्मातृपितृवद्स्मासु प्रतिपद्यताम् MBh. 5, 3428. त्वपि सम्यक्काबाहो प्रतिपन्ना यथास्विनः 4153. न युक्तं भवतास्मासु प्रतिपत्तुमसंप्रतम् 3255. mit dem acc. der Person: (तान्) शिष्यवृत्तिं समापन्नान्गुरुवत्प्रत्यपद्यत 15, 40. अन्यथा प्रतिपन्ना: *die anders verfahren* 14, 1013. 1015. — 9) *Statt finden*: यस्मात् लोके दृश्यते तमिषा: पृथिवीसमा: । तस्माज्जन्म च भूतानां भवश्च प्रतिपद्यते ॥ MBh. 3, 1095. *sich einstellen bei* (acc.): यशो मा प्रतिपद्यताम् Pār. GRHJ. 2, 6. — 10) *Jmd Etwas zukommen lassen*: तस्मै साम च पूजां च यथावत्प्रतिपेदिरे PADMA-P. in Verz. d. Oxf. H. 11, b, 9 v. u. *wieder abgeben*: स यदि प्रतिपद्येत यथान्यस्तं यथाकृतम् M. 8, 183. — 11) प्रतिपन्न = विक्रात (vielleicht nur fehlerhaft für विज्ञात) H. an. 4, 180. — Accent eines auf प्रतिपन्न ausgehenden comp. P. 6, 2, 170. — MBh. 2, 475 ist st. प्रतिपद्भिश्च, wofür WESTERGAARD stillschweigend प्रतिपद्यद्भिश्च (gegen das Versmaass) setzt, प्रतिपद्यद्भिश्च zu lesen. — Vgl. प्रतिपत्त्व्य, ०पत्ति, ०पद्, पाद्य. — caus. 1) *hinführen zu, hinschaffen zu, herbeischaffen*: अपराजिताम् KAUÇ. 17. ऋतुपर्णां जना राज्ञे भीमाय प्रत्यपादयन् MBh. 3, 2852. एतेन तूर्णं प्रतिपादयेमान् श्वेताङ्कयान् 4, 1663. तदास्यभागावत्तेरपाङ्कती: प्रतिपादयेत् MEND. UP. 4, 2, 2. शस्त्राणि यत्नं कवचात्रयांश्च नगान्क्यांश्च प्रतिपादयित्वा MBh. 5, 2714. — 2) *Jmd* (acc.) *zu Etwas* (acc.) *gelangen lassen, theilhaftig machen* MBh. 10, 610. सर्वरत्नानि राजा तु यथाहं प्रतिपादयेत् । ब्राह्मणान्वेदविदुषः M. 11, 4. ताभ्यां च यत्र स मुनिर्गोचरं प्रतिपादितः MBh. 4, 446. पुत्रं मे — ऐहिकामुष्मिकफलं तत्सम्यक्प्रतिपादय MĀRK. P. 26, 33. कृतमङ्गलाम् । वैवाहिकविधिं कन्यां प्रातपाद्य 24, 62 संस्कारं प्रतिपादितौ HARIV. 9104. यद्यशो जीवलोकं च त्वयाहं प्रतिपादितः R. 2, 74, 6. अथर्मात्पाहि मां राजन्धर्मं च प्रातपादय so v. a. *lass mir mein Recht, schmalere mir nicht mein Recht* MBh. 1, 3417. 5, 6077; vgl. u. 6 am Anfange. — 3) *Jmd* (loc. dat. gen.) *Etwas geben, übergeben, schenken* KAUÇ. 42. 76. 77. तत्र यद्विद्यज्ञातं स्यात्तस्मिन्प्रतिपादयेत् M. 9, 190. 244. धनानि तु यथाशक्ति विप्रेषु प्रतिपादयेत् 11, 6. MBh. 13, 1569. गुरुम् — भारद्वाजाय सुप्रातः प्रत्यपादयत् 1, 5213. अस्त्रं प्रत्यपादयत् HARIV. 773. R. GORR. 4, 1, 72. 15, 23 (25 SCHL.). R. SCHL. 1, 28, 31. BHARTI. 2, 13. RAGH. 5, 15. KATHĀS. 35, 96. MĀRK. P. 20, 49. RĀGĀ-TAR. 1, 316. 2, 132. 3, 181. 187. 307. 322. 4, 193. ग्रामः — अयकारत्वेन प्रतिपादितः Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 539, 15. सत्यवती नाम ऋचीकिं प्रतिपादिता *zur Gattin gegeben* R. 1, 35, 7 (36, 7 GORR.). तौ तस्मै प्रतिपादय MBh. 1, 4639. KUMĀRAS. 6, 79. MĀRK. P. 15, 27. PAÑĀT. 184, 6. KATHĀS. 4, 19. विद्येव कन्यका मोहादपात्रे प्रतिपादिता *mitgetheilt, gelehrt und gegeben* KATHĀS. 24, 26. das obj. im gen. (!): प्रतिश्रुतस्य यो ऽनीशः प्रतिपादयितुं भवान् BHĀG. P. 8, 19, 35. — 4) *einsetzen in* (loc.): सुप्रोवमेव तद्वाद्ये राधवः प्रत्यपादयत् R. 1, 1, 68. 5, 32, 20. यद्य राजा सुतम् — यौवराज्ये प्रतिपादयिष्यति R. GORR. 2, 6, 33. — 5) *bewirken, bereten, verursachen, hervorruhen*: वैरे ऽस्मिन्प्रतिपादिते R. 4, 22, 20. मम प्रीतिर्महती प्रतिपादिता MBh. 7, 6456.

प्रतिपादयिष्यता नववैधव्यम् KUMĀRAS. 4, 1. यत्नेन प्रतिपादिता मुखर्योर्मञ्जिर्योर्मकता SĀH. D. 47, 4. — 6) *zu wissen thun, darlegen, auseinandersetzen, lehren, klar machen*: ज्ञातिज्ञानपदान्धर्मान् श्रेणीधर्माश्च धर्मवित् । समीह्य कुलधर्माश्च स्वधर्मं प्रतिपादयेत् ॥ M. 8, 41. 391. स त्वं धर्माद्यपगतम् — स्वधर्मं प्रतिपादय R. 4, 17, 50; vgl. oben u. 2 am Ende. यद्यपि सर्वगं वस्तु तच्चैव प्रतिपादितम् MBh. 1, 70. अदिशमस्माकं प्रतिपादय PRAB. 34, 1. येरीदृशी भगवतो गतिः — प्रतिपादिता नः BHĀG. P. 4, 22, 47. लिङ्गात्प्रतिपादितात् TARKAS. 32. DAÇAR. 1, 52. Verz. d. Oxf. H. 161, b, 23. fg. SĀH. D. 20, 9. स (धर्मः) सर्वो वेदे प्रतिपादितः KULL. zu M. 2, 1. 7. MADHUS. in Ind. St. 1, 19, 2 v. u. Schol. zu Kap. 1, 56. zu ĠAIM. 1, 17. zu RV. PRĀT. 2, 44. 3, 16. प्रतिपादितव SĀH. D. 4, 3. — 7) *ansehen —, halten für*: यत्पशुं सारमेयं प्रतिपादयसि PAÑĀT. 169, 22. — Vgl. प्रतिपादक u. s. w. — *desid. vom caus. darzulegen —, auseinandersetzen im Sinne haben*: सर्वस्यामुपनिषदि प्रतिपादयिषितो ऽर्थः ÇĀMK. zu BRH. ĀR. UP. S. 207; vgl. प्रतिपादयिषु.

— अभिप्रति *anheben mit oder bei Jmd*: मामभिप्रतिपत्स्यति AIR. BR. 2, 16, 3, 14.

— विप्रति *nach verschiedenen Richtungen hin gehen, hierhin und dorthin sich begeben*: वेद्य यथेमाः प्रजाः प्रयत्यो विप्रतिपद्यन्ति ३ ÇĀT. BH. 14, 9, 1, 2. *hierhin und dorthin sich wenden, nicht wissen was zu thun ist, mit sich uneins sein*: येषु विप्रतिपद्यन्ते षट् (पञ्चस्विन्द्रियेषु मनसि च) मोहात्फलागमे । तेष्वध्यवसिताध्यायी विन्दते ध्यानज्ञं फलम् ॥ MBh. 3, 13946. कृत्वा बहून्यकर्माणि पाण्डवेषु नृशंसवत् । मिथ्यावृत्तिर्नार्यः सन्नद्य विप्रतिपद्यन्ते ॥ 5, 4276. श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला । समाधावचला बुद्धिः BHĀG. 2, 53. R. 2, 109, 1 (विपन्न GORR.). *auseinandergehen, verschiedener Ansicht sein*: नहि घटौ प्रत्यत्ताविषये कश्चिद्विप्रतिपद्यते नास्ति घट इति ÇĀMK. zu BRH. ĀR. UP. S. 8. अत्र विप्रतिपद्यन्ते 145, ult. एवं हि बह्वो विप्रतिपन्नाः WIND. SANCARA 94, 5. — Vgl. विप्रतिपत्ति.

— संप्रति 1) *gelangen zu*: अनिलः प्रवृद्धस्तिर्यग्गाः सिराः संप्रतिपद्य सुÇR. 4, 267, 13. *herantreten, herbeikommen*: तस्मै संप्रतिपन्नाय यथावत्परिपृच्छते । शिष्याय MBh. 14, 946. *hingehen zu Jmd* (acc.) ÇIÇ. 16, 13 (nach einer anderen Erklärung mit रूपेण verbunden so v. a. *angreifen*). *über Jmd kommen, zustossen*: व्यसनं हि मकाराज्ञो मोहात्संप्रतिपद्यते PAÑĀT. ed. ORN. 1, 164. — 2) *gelangen zu, erhalten, wiedererhalten*: नष्टं धनं स्वामी क्षिप्रं संप्रतिपद्यते R. 3, 73, 16. *empfangen*: कामादरं ददामीति तद्वै संप्रतिपद्यताम् HARIV. 12201. — 3) *über Jmd oder Etwas einig werden, sich verständigen*: (सर्वे) त्वपि संप्रतिपत्स्यन्ते धर्मात्मा सत्यवागिति MBh. 5, 2706. तस्मात्सुमन्त्रितं साधु भवतः — कार्यं संप्रतिपद्यन्ताम् R. 5, 77, 16. संप्रतिपन्नमर्थम् *anerkannt* KULL. zu M. 8, 50. द्यामुष्यायणास्तु ज्ञानक्रप्रतिपत्कीतृभ्यामावयोरयमिति संप्रतिपन्नः s. u. द्यामुष्यायणा. — 4) *halten für, ansehen*: न मां परं संप्रतिपत्तुमर्हसि KUMĀRAS. 5, 39. — 5) *vollbringen*: यो व्रतं वै यथोद्दिष्टं तथा संप्रतिपद्यते । अखण्डं सम्पगारभ्य तस्य लोकाः सनातनाः ॥ MBh. 13, 3629. — Vgl. संप्रतिपत्ति. — caus. *zukommen lassen, geben*: भगवन्साधु मे ऽद्यान्यत्स्थानं संप्रतिपादय MBh. 3, 12759. भूमिदानस्य — वासुदेवे — संप्रतिपादितस्य BHĀG. P. 5, 24, 19. Vgl. संप्रतिपादन.

— वि 1) *verkehrt gehen, missglücken, missrathen, misslingen; in*